वार्तालाप नं.490, दिगनेर, (यूपी), दिनांक 11.01.08

Disc.CD No.490, dated 11.01.08 at Digner, (Uttar Pradesh)

समय: 12.44-16.35

जिज्ञासु- बाबा, शिव के ऊपर बेल पत्र चढ़ाते हैं। उसका अर्थ क्या ह?

बाबा- बेल पत्री माना तीन पत्ते। क्या? जसे ये सृष्टि रूपी झाड़ ह।इस सृष्टि रूपी झाड़ में एक फल ऐसा ह।जो पेट को बहुत तंदुरूस्त बनाता ह।उसका नाम ह।श्रीफल, बेल। उसका नाम संस्कृत में ह।श्रीफल, श्रेष्ठ फल। और उसके जो पत्ते होते हैं वो तीन इकट्ठे पत्ते होते हैं। सृष्टि रूपी झाड़ में जो श्रीफल ह। भक्तिमार्ग में वो स्थूल फल उठाय लिया ह। जड़ वृक्ष का जड़ फल। और ह।ये मनुष्य सृष्टि रूपी चतन्य झाड़ का चतन्य फल।

Time: 12.44-16.35
Student: Baba, people offer *Bel* leaves to *Shiv*. What does it mean?
Baba: *Bel* leaf means three leaves. What? For example, this is a world tree. In this world tree there is one such fruit which keeps the stomach very healthy and its name is *Shrifal, Bel*. Its name in Sanskrit is *Shrifal*, i.e. a righteous fruit (shresht phal). And its leaf looks like three leaves clubbed together. The *shrifal* in the world tree; they have interpreted it to mean the physical fruit in the path of *bhakti*; the non-living fruit of the non-living tree and this is a living fruit of the living tree of the human world.

इसके तीन पत्ते हैं माना तीन आत्मायें निमित्त बनी हुई हैं। जसे सृष्टि का पहला पत्ता कौन आत्मा? कृष्ण। पहला पत्ता ह।ना। ऐसे ही वो पहला पत्ता तो बाद में बनता ह। लेकिन संगमयुग में जब शिव बाप आते हैं तो तीन आत्माओं को निमित्त बनाते हैं। अकेले नहीं आते। कौन-2 सी तीन आत्मायें? ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। और यही तीन आत्मायें हैं। जो शिव के ऊपर अर्पण होती हैं। अपने जीवन को इन्होंने शिव के ऊपर अर्पण कर दिया। बलिहार शिव पर कर दिया।

It consists of three leaves, i.e. three souls are the instruments. For example, who is the first soul of the world? Krishna. He is the first leaf, isn't he? Similarly, he becomes the first leaf later on. But in the Confluence Age, when the Father Shiv comes, He makes three souls instruments. He does not come alone. Which three souls? Brahma, Vishnu and Shankar. And these are the three souls which surrender to Shiv. They have surrendered their life to Shiv. They sacrificed themselves upon Shiv.

तो ब्रह्माकुमारी किस लिए गाती हैं? किसके लिए? सिर्फ ब्रह्मा बाबा के लिए गाती हैं। उन्हें पता ही नहीं ह।कि एक आत्मा नहीं ह।जो शिव के ऊपर पूरा अपने को अर्पण करती ह। कितनी आत्मायें हैं? तीन आत्मायें हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी ह। विष्णु की आत्मा भी ह।और शंकर की आत्मा भी ह। ये तीनों ही 100 पर्सेन्ट जब अपने को अर्पण कर देती हैं। अपने संकल्पों को भी बाप समान बनाए लेती ह। माना मनमनाभव बन जाती हैं। तो यादगार बनती ह।शिव के ऊपर तीन पत्र अर्पण करने की। एक सेम्पल हो गया मनुष्य सृष्टि के लिए।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ईश्वरीय कार्य में अपने को कैसे अर्पण करना है? जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर ने जीवन में अपने को अर्पण किया। और तीनों एक साथ अर्पण होते हैं। ऐसे ही अर्पण करना है।

In whose praise do the Brahmakumaris sing? For whom [do they sing]? They sing only for Brahma Baba. They do not know at all that there is not just one soul which surrenders itself completely upon Shiv. How many souls are there? There are three souls. There is the soul of Brahma as well as Vishnu and there is the soul of Shankar as well. When all three of them surrender 100 percent, when they make their thoughts equal to the Father, i.e. when they merge their thoughts with His thoughts (manmanabhav), then it leads to the formation of a memorial of offering three leaves to *Shiv(ling).* It became a sample for the human world, how we should dedicate ourselves in the task of God. We should dedicate ourselves just as Brahma, Vishnu; Shankar dedicated themselves in their lives. And all the three surrender simultaneously, we should surrender in a similar way.

समय:16.36-24.42

जिज्ञासु- बाबा, बी.के. और एडवांस में क्या अंतर है□बाबा?

बाबा- बी माना ब्रह्मा और के माना कुमार-कुमारी। बी.के. माना ब्रह्मा कुमार-कुमारी। और पी.बी.के.। पी. माना प्रजापिता और बी.के. माना ब्रह्मा कुमार-कुमारी। एक है□ब्रह्मा के पुत्र। कोई भी पूछता है□आप कौन हैं? तो बताते हैं हम ब्रह्मा कुमार हैं। कोई को समझ में नहीं आता आप ब्रह्माकुमार हैं क्या मतलब? ब्रह्मा माना क्या? ब्रह्म माना बड़ी, मा माना माँ। बड़ी अम्मा के कुमार हैं। तो बुद्धिमान होगा तो पूछेगा कि तुम बड़ी अम्मा के कुमार अपने को कहते हो। जब-जब पूछेंगे तब-तब यही बताओगे। क्या? कि हम ब्रह्माकुमार हैं। अरे! तुम अम्मा का ही नाम क्यों लेते हो? जब-जब पूछेंगे तुम अम्मा कुमार अम्मा कुमार की रट लागाए हुए हो। तुम्हारा बप्पा कहाँ है? उसका नाम क्यों नहीं लेते हो? पहले पुराने-2 जो बी.के. ब्रह्माकुमारियाँ थी वो पीयु का नाम धड़ाके से लेती थी। पीयु की कथायें सुनाती थी यज्ञ के आदि की परंतु जब से पी.बी.के. निकले।

Time: 16.36-24.42

Student: Baba, what is the difference between BK and advance?

Baba: B means Brahma and K means Kumar-Kumari. BK means Brahma Kumar-Kumari. And PBK. P means Prajapita and BK means Brahma Kumar-Kumari. One kind (of children) is sons of Brahma. If someone asks, Who are you? Then they say, We are Brahmakumars. Nobody understands what is meant by 'You are Brahmakumars'. What is meant by Brahma? Brahm means *bari* (senior) and *ma* means mother. We are sons of the senior mother. If he is intelligent he will ask, 'You call yourselves to be sons of the senior mother. Whenever we ask you, you will give the same reply. What? That we are *Brahmakumars* (sons of Brahma). Arey! Why do you utter only the name of your mother? Whenever we ask you, you keep repeating that you are sons of the mother, sons of the mother. Where is your father? Why don't you utter his name?' The old Brahamakumaris used to utter the name of Piu fearlessly. They used to narrate the stories of Piu from the beginning of the yagya. But ever since PBKs emerged….

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जो परिचय देते हैं कहते हैं कि हम सिर्फ ब्रह्माकुमार नहीं हैं लेकिन ब्रह्मा से पहले प्रजापिता भी ह॥ माना हम प्रवृत्तिमार्ग के हैं। क्या? हमारी गीता पाठशालायें भी प्रवृत्तिमार्ग की हैं। हमारा जो मधुबन ह॰ उसमें जो मधुसुदन ही पढ़ाई पढ़ाने वाला वो भी निवृत्तिमार्ग का ह॰ या प्रवृत्तिमार्ग का ह? प्रवृत्तिमार्ग का ह॥ पढ़ाई भी हम प्रवृत्तिमार्ग की पढ़ाते हैं। पढ़ाने वाले भी गीतापाठशालायें हों, चाहे मधुबन हों वो प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं। और हमारे जीवन का लक्ष्य भी प्रवृत्तिमार्ग का नर नारायण नारी से लक्ष्मी बनने का ह॥ तो लोगों को समझ में आता ह॥ कि ये तो प्रवृत्तिमार्ग की स्थापना हो रही ह॥

…those who introduce themselves saying, we are not just Brahmakumars, but Prajapita is also prefixed to Brahma. It means that we belong to the path of household.' What? 'Our *gitapathshalas* also belong to the path of household. The *Madhusudan* who teaches us in our Madhuban belongs to the path of renunciation or to the path of household? He belongs to the path of household. The knowledge that we teach is also of the path of household. The teachers, whether at the *Gitapathshalas,* whether at the *Madhubans,* belong to the path of household. And the aim of our life is also the path of household, to change from a man to Narayan and from a woman to Lakshmi.' So, people understand that the path of household is being established.

और जो कहते हैं हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं। तो लोगों को या तो समझ में नहीं आता या फिर समझ जाते हैं कि ये तो निवृत्तिमार्ग की स्थापना करने वाले हैं। जैसे कोई अम्मा रूठ जाती ह॰ बप्पा से। तो अपने बच्चों को बाप का परिचय नहीं देगी। मर गया। ऐसे ही। सन॰47 ये ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का हुआ। उससे पहले संस्था का नाम क्या था? ओम मं॰ली। आ, ऊ, म। माना तीन की मं॰ली। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की मं॰ली ये नाम था। आ माना ब्रह्मा, ऊ माना विष्णु, म माना महेश। बाद में वो त्रिमूर्ति शिवबाप गुप्त हो गया। और अम्मा परस्त बच गए। जिन्होंने ब्रह्मा की गोद में पालना ली। न ब्रह्मा को पता कि गीता माता का पति, गीतापति भगवान कौन? और न ब्रह्माकुमार-कुमारियों को पता की गीतामाता का पति, गीतापति भगवान कौन? मात-पिता का पता ही नहीं। और माँ की क्या हालत होती ह? जब बाप का परछाया उठ जाता ह॥ तो मातायें किसके अं॰र में आ जाती हैं? बच्चों के अं॰र में आ जाती हैं।

And those who say that they are Brahmakumar-kumaris. So, either people do not understand or they think that these people establish the path of renunciation. For example, if a mother becomes angry with the father, then she will not give the introduction of the father to her children. (She will tell them), he is dead. Similarly, this Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalay started in 1947. What was the name of this institution before that? Om Mandali. *Aa, Oo, Ma*. It means a group of three. The name was a group of Brahma, Vishnu and Shankar. *Aa* means Brahma, *Oo* means Vishnu, *Ma* means Mahesh. Later on that Trimurty Father Shiv became incognito. And the followers of the Mother, who obtained sustenance in the lap of Brahma remained. Neither Brahma knew who the mother Gita's husband, God of the Gita is, nor do the Brahma Kumar Kumaris know. They do not know about the mother and the father at all. And what is the condition of the mother when she is without the support of the father? Then under whom does the mother come? She comes under the (control of the) children.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

आज भारतवर्ष में घर-2 में ये हालत है। मातायें आधीन बन गई भल रचयता है। बच्चों की रचना रचने वाली हैं या रचयता हैं? रचयता हैं। फिर भी आधीन हैं। और बच्चे उनके ऊपर अधिकारी बनकरके बैठ जाते हैं। जैसे बाबा ने बताया कि कलियुग अंत में क्या हाल होता है? इस नर्क की दुनियाँ में गीतामाता का क्या हाल होता है? गीता का पति कृष्ण बच्चे को बनाए दिया जाता है। वो ही कर्ता-धर्ता हो जाता है माताओं का।

Today this is the condition in every home in India. Mothers have become slaves, although they are the creators. Do they create the children, the creation or are they the creators? They are the creators. Yet they are dependent. And children become the ones who control them. For example, Baba has said… what is the condition at the end of the Iron Age? What is the condition of mother Gita in this hellish world? Child Krishna is made the husband of the Gita. He becomes the controller of the mothers.

शूटिंग कहाँ होती है? ब्राह्मणों के संगमयुगी दुनियाँ में शूटिंग हो गई। ब्रह्मा कुमारी विद्यालय को चलाने वाला जो ट्रस्ट है, वर्ल्ड रिन्युअल ट्रस्ट उसके कर्ता-धर्ता बच्चे हो गए या उसमें ब्रह्मा का नाम था? या प्रजापिता का नाम था? दोनों ही नाम उड़ाए दिए गए। अम्मा के ऊपर तो बच्चे ऐसे काबिज़ हो गए कि माँ के प्राण-पखेरू ही उड़ गए। हार्टफेल हो गया। वो कहलाते हैं अपन को कि हम ब्रह्मा कुमार हैं। बाप का उनको पता ही नहीं है कि बाप अभी भी इस सृष्टि में मौजूद है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को साथ लेकरके जाऊंगा। साथ रहेंगे, साथ जीयेंगे, साथ खायेंगे, साथ पीयेंगे, खेलेंगे और साथ-साथ अपने घर जावेंगे। बीच में नहीं जाए सकते। भल बच्चों ने माँ का हार्ट फेल कर दिया लेकिन बाप बच्चों को छोड़ने वाला नहीं है। तो ये अंतर है ब्रह्माकुमार-कुमारी और प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कमारी का।

Where does the shooting take place? The shooting took place in the Confluence Age world of Brahmins. Children became the controllers of the trust, the World Renewal Trust which runs the Brahmakumari Vidyalaya or was there the name of Brahma in it? Or was there the name of Prajapita in it? Both the names were removed. Children became so dominant over the mother that the mother (Brahma) lost her life. She met with a heart failure. They introduce themselves as Brahmakumars. They do not know about the father at all, that the father is still present in this world. The Father says, 'I will take you children with me. We will stay together, we will live together, we will eat together, we will drink together, we will play together, and we will go home together. I cannot leave in between.' Although the children caused the mother to have a heart failure, the Father is not going to leave the children. So, this is the difference between the Brahmakumar-kumaris and the Prajapita Brahmakumar-kumaris.

समय-24.24-27.30

जिज्ञासु- बाबा, आम को फलों का राजा कहा जाता है।

बाबा- आम, फलों का राजा कहा जाता है। आम हिंदी शब्द है। उसका शुद्ध शब्द है संस्कृत में आम्र। क्या? आम्र- आ मर। जो आए भगवान बाप के दरबार में और आते ही तुरंत दान महाकल्याण। आते ही मर जाए। उसको कहते हैं आम्र फल। फलों का राजा। जैसे बाप बोलते

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

हैं मुरली में मेरे तीन प्रकार के बच्चे हैं। तीन प्रकार के पंतगों की तरह। कोई फर्स्ट क्लास पतंगे होते हैं फिदा होने वाले। आते हैं और आते ही शमा के ऊपर मर मिटते हैं। तन, मन, धन सब स्वाहा ये फर्स्ट क्लास।

Time: 24.24-27.30
Student: Baba, mango (*aam*) is called the king of fruits.
Baba: Mango is called the king of fruits. *Aam* is a Hindi word. Its original word in Sanskrit is *Aamra.* What? *Aamra - Aa mar* (come die). The one who comes in the court of God, the Father and as soon as he comes he follows the principle of *'turant daan mahakalyan'* (there is great benefit in immediate donation). He should die (i.e. sacrifice himself) as soon as he comes. It is called the mango fruit (*aamra fal*). King of fruits. For example, the Father says in the Murli, My children are of three kinds. They are like the three kinds of flies (*patangey*). Some are first class flies who sacrifice themselves. They come and as soon as they come, they sacrifice themselves on the light (*shama*). They sacrifice everything, including the body, mind and wealth, they are the first class.

दूसरे दो नंबर के आते हैं चक्कर काटते हैं शमा का। शमा कौन ह यहाँ? भगवान बाप का प्रक्टिकल पार्ट। तो जो नंबर दो के हैं वो आते हैं चक्कर काटते हैं फिर टाँग जल गई, मूँछ जल गई फिर भाग जाते हैं। फिर दिल होती ह फिर आते हैं, फिर चक्कर काटते हैं फिर भागते हैं। वो आना और चक्कर काटना और भाग जाना। ये उनका चलता रहता ह फिर कोई-कोई उनमें से ऐसे भी होते हैं कि आकरके फिदा हो जाते हैं। तो चक्कर काटके फिदा होने वाले हुए ना।

Next, the number two, they are those who circle around the light. Who is the light here? The practical part of God the Father. So, those who are the second type come, circle around [the light], when their leg starts burning, when their moustache starts burning, they run away. When they feel interested once again, they come again, they circle again and then run away. They continue to do this. Then some among them are also such, they come and sacrifice themselves. So, they are the ones who circle around and then sacrifice themselves.

तीसरे वो हैं जो आते हैं चक्कर काटते हैं और हाथ-पाँव और मूँछ जली तो गए की गए। फिर कभी वापस आते ही नहीं वो थर्ड क्लास। तो बाप कहते हैं जो आया और आते ही फिदा हो गया। तुरंत दान महाकल्याण हो गया। वो आम्र फल ह फलों का राजा ह

The third type is those who come, circle around and as soon as their arms, legs and moustaches burn, they go away forever . Then they never come back again. They belong to the third class. So, the Father says, 'the one who comes and sacrifices himself as soon as he comes according to the proverb *'turant daan mahakalyan*' is the mango fruit, king of fruits.

समय-45.23-50.30

जिज्ञासु- बाबा, बाबा कहते हैं मुरली में कि संकल्पों से सृष्टि रची गई।

बाबा- ब्रह्मा के संकल्पों से सृष्टि रच गई।

जिज्ञासु- तो बाबा मुरली में बोला ह कि बाप जगतम्बा के साथ दस कर्मेन्द्रियों के साथ मिलन मेला मनाते हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 45.23-50.30
Student: Baba, Baba says in the Murli that the world was created through thoughts.
Baba: The world was created through the thoughts of Brahma.
Student: So, Baba, it has been said in the Murli that the Father meets Jagadamba through ten bodily organs.

बाबा- जगतपिता जगतम्बा के साथ जो मिलन मेला मनाता ह॥ उसकी यादगार ह॰जगतम्बा का मेला। सबसे बड़ा मेला किसका लगता ह॰? जगतम्बा का। क्यों लगता ह॰? और नौ देवियों का इतना क्यों नहीं मान्यता ह॰? जगतम्बा का ही बड़े ते बड़ा मेला क्यों लगता ह॰? कोई कारण होगा? अरे! क्या कारण होगा? बड़े ते बड़ा मेला जो ह॰ज्यादा से ज्यादा मिलन मेला जगतपिता के साथ किसने मनाया? जगतम्बा ने मनाया। औरों ने भी मनाया औरों ने भी सर्वसंबंध जोड़े लेकिन जितना जगतम्बा ने जोड़ा इतना किसी ने भी नहीं जोड़ा। लक्ष्मी ने भी नहीं जोड़ा।

Baba: The memorial of the *milan mela* (meeting-fair) that takes place between the Father of the world and the mother of the world is the fair of Jagdamba. Whose fair is the biggest? Jagdamba's (fair). Why is it so? Why the other nine female deities are not recognized so much? Why is the fair of Jagadamba the biggest one? There must be some reason. Arey! What might be the reason? Who enjoyed the milan mela with the Father of the world to the maximum extent? Jagadamba. Others also experienced, others also established all the relationships, but nobody established as much as Jagatamba did. Not even Lakshmi did to that extent.

जिज्ञासु- तो बाबा ये मन-बुद्धि की बात हुई ना।
बाबा- ये कोई बात हुई। संबंध जो जोड़े जोते हैं वो संबंध साकार में माने जाते हैं या निराकार में संबंध माने जाते हैं?
जिज्ञासु- साकार में।
Student: So, Baba this is about the mind and intellect, isn't it?
Baba: That is not the fact. As regards the relationships that are established, are they considered to be in corporeal or in incorporeal form?
Student: In corporeal form.

बाबा- जो ये दुनियाँ ह॥ नई दुनियाँ तो नहीं ह॥ कि नई दुनियाँ ह॰? पुरानी दुनियाँ ह॥ तो पुरानी दुनियाँ में जो भी संबंध जोड़े जाते हैं। वो साकार में जोड़े जाते हैं। आकार में और निराकार में संबंध नहीं कहा जाता। जो आकारी हैं उनको फरिश्ता कहा जाता ह॥ और फरिश्ताओं का फर्श की दुनियाँ से कोई संबंध ही नहीं। और जो निराकारी ह॰बिंदु ह॰उसका तो एक ही संबंध ह॥ बिंदु-2 आत्माओं के साथ। वो सिर्फ बाप ह॥ और बिंदु-2 आत्मायें सब बच्चे हैं, बच्चियाँ भी नहीं जो भाई बहन का संबंध जोड़े। तो न निराकार में संबंध और न आकार में संबंध। संबंध काहे में जुड़ते हैं? साकार में।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: This world is not a new world. Or is it a new world? It is an old world. So, whatever relationships are established in the old world are established in the corporeal form. Relationships are not said to exist in a subtle and incorporeal form. Those who are subtle are called angels (*farishta*). And angels do not have any relationship with the Earthly world (*farsh ki duniya*). And the one who is incorporeal, a point, establishes only one relationship with the point-like souls. He is just a father. And all the point-like souls are sons, not even daughters so that you may establish a relationship of brother and sister. So, relationships can exist neither in incorporeal form nor in a subtle form. How are relationships established? In a corporeal form.

तो जगतम्बा ने जो प्रक्टिकल संबंध जोड़े हैं। वो साकार शरीर की कर्मेन्द्रियों के द्वारा जोड़े हैं या निराकार आत्मा के द्वारा या सूक्ष्म शरीर के द्वारा जोड़ा ह? साकार कर्मेन्द्रियों से जोड़े हैं। तभी मेला लगता ह यादगार। मेला किस बात की यादगार ह? मिलन मेला की यादगार ह मेला। जगतम्बा ने उस साकार बाप के साथ प्रक्टिकल में मिलन मेला सबसे जास्ती मनाया।

So, the practical relationship that Jagadamba established; did she establish those relationships through the organs of the corporeal body or through the incorporeal soul or through the subtle body? She established relationship through the corporeal bodily organs. Only then is the fair organized as a memorial. What does a fair (*mela*) signify? Fair is the memorial of milan mela. Jagadamba enjoyed the meeting with that corporeal father in practical to the maximum extent.

और मेले जो भी हैं वो सब मल्ले बनाने वाले हैं। क्या? जो इलाहाबाद में मेला लगता ह कुम्भ का मेला। उसमें नदियाँ मिलती हैं या सागर मिलता ह? नदियाँ मिलती हैं। उन मेलों में मल्ला इकट्ठा होता ह और गंगा-सागर मेला होता ह वहाँ भी यादगार ह यादगार क्या मनाते हैं? और मेले बार-बार गंगा-सागर एक बार। वो ज्ञान सागर ह ना। तो ज्ञान सागर की ये दिखाई गई ह ये संग का रंग ह वो संग का रंग ऐसा लेती ह कि सारी दुनियाँ का संघार करने के निमित्त बन जाती ह इतनी ताकत आ जाती ह

All other fairs (*meley*) are those that make us dirty (*mailey*). What? A fair, the fair of Kumbha is organized at Allahabad. Do rivers meet there or does the ocean meet? The rivers meet. Dirt accumulates in those fairs. And there is also a memorial at the place where a meeting of Ganga and ocean (*Ganga-Sagar*) is organized. What is the memorial? All other fairs are organized again and again and the fair of Ganga Sagar is organized only once. He is an Ocean of knowledge, isn't He? So, it is the importance of the Ocean of knowledge which has been depicted. It is the colour of the company. She is coloured by the company (of the Father) in such a way that she becomes an instrument in destroying the entire world. She accumulates such power.

जो जगतपिता शंकर ह जब वो जगतम्बा महाकाली का रूप धारण करती ह तो शंकरजी क्या कर देते हैं? त्राहिमाम तो जगतपिता वो उसका सामना नहीं करता क्योंकि जगतपिता ज्यादा चतुर चालाक ह जो शंकर का पार्ट ह वो विनाश का ह परंतु शंकर विनाश नहीं करता। शक्तियाँ निमित्त बनती हैं। इसीलिए जब काम उनका हो रहा ह मुफ्त में तो काहे के लिए िस्टर्ब करो? क्यों मुकाबला करो?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

The one who is Jagatpita Shankar… when that Jagadamba assumes the form of Mahakali, what does Shankarji do? *Traahimaam* (have mercy upon me!). So, Jagatpita does not confront her because Jagatpita is cleverer. Shankar is supposed to play a part of destruction, but Shankar does not cause destruction. Shaktis become the instruments. This is why when his task is being accomplished (by her) free of cost, then why should he disturb her? Why should he confront her?

समय:50.35-53.32

जिज्ञासु- बाबा, मुरली में बोला ह बाबा सबकुछ बच्चों को देते हैं। जितना ज्ञान बाबा में होता ह वो सारा बच्चों की बुद्धि में उड़ेल देते हैं। लेकिन दिव्य दृष्टि की चाबी नहीं देते हैं। वो तो साक्षात्कार कुछ भी होता नहीं। अगर सक्षात्कार कुछ भी होता नहीं ह तो दिव्य दृष्टि की चाबी बाप बच्चों को क्यों नहीं देते?

Time: 50.33-53.32

Student: Baba, it has been said in a Murli that Baba gives everything to the children. Baba pours the entire knowledge that he has into the intellect of the children. But He does not give the key to divine vision. Visions as such do not have any value. If there is no value of visions, then why does the Father not give the key to divine vision to the children?

बाबा- बच्चों को अगर दिव्य दृष्टि की चाबी दे दें। तो बच्चे उसको मिसयूज़ करेंगे या अच्छा यूज़ करेंगे? मिसयूज़ कर देंगे। इसीलिए बच्चों को दिव्य दृष्टि की चाबी नहीं देते। ज्ञान देते हैं उसका ही कितना मिसयूज़ करते हैं। 70 साल हो गए ज्ञान लेते-2। ज्ञान का फल...। एक भी बच्चा मुक्ति और जीवनमुक्ति ये फल नहीं दिखा पाया। क्या? इसीलिए जो चाबी ह साक्षात्कार की, दिव्य दृष्टि की वो बाप बच्चों को नहीं देते हैं। वो अपने पास रखते हैं। क्या?

Baba: If the key to visions is given to the children, then will children misuse it or use it properly? They will misuse it. This is why children are not given the key to visions. He gives knowledge; even that is misused (by the children) so much. We have been receiving the knowledge for 70 years. The fruits of knowledge…..Not even a single child could show this fruit of *mukti* and *jeevanmukti.* What? This is why the Father does not give the key to visions, the key to divine vision to the children. He keeps it to Himself. What?

जब प्रत्यक्षता होनी होगी। आदि में भी प्रत्यक्षता हुई तो चाबी घुमाते गए और बच्चे पहचानते गए कि ये कृष्ण ह ये ब्रह्मा ह। अंत में भी ऐसे ही होगा। अभी ज्ञान इतना दे रहे हैं। कोई समझता ह कोई नहीं समझता ह। किसी को निश्चय होता ह किसीको नहीं होता ह। परंतु अंत में भी क्या होगा? संकल्प स्वप्न और साक्षात्कार की चाबी इतनी तेजी से घूमेगी कि धड़ाधड़ जो बाप के भक्त बच्चे हैं वो बाप को पहचानते जावेंगे और प्रत्यक्ष करते जावेंगे।

When revelation is about to take place…; even when revelation took place in the beginning He went on rotating the key and the children went on recognizing that this is Krishna, this is Brahma. Even in the end a similar thing will happen. Now he is giving so much knowledge. Some understand and some do not. Some develop faith and some do not. But what will happen in the end? The key to thoughts, dreams and visions will be rotated so quickly that the devotee children of the Father will go on recognizing the Father and they will go on revealing Him.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

उसकी निशानी ह भागवत। गीताज्ञान में उतना मजमा इकट्ठा नहीं होता परंतु जहाँ भागवत होती ह तो बड़ा मजमा इकट्ठा हो जाता ह। क्यों? ज्ञान सुनने में लोग इतना इंट्रेस्ट नहीं लेते; लेकिन जब देखते हैं प्रक्टिकल में भाग रही हैं। अरे रे रे रे चलीओ चलीओ चलीओ। तो सबको बड़ा इंट्रेस्ट जग जाता ह। अरे ये क्या हो रहा ह ऐसा तो दुनियाँ में, हिस्ट्री में कभी ही नहीं हुआ। ज़रूर भगवान आया हुआ ह। वो भागवत ही भगवान बाप को प्रत्यक्ष कर देती ह।

Its indication is Bhaagwat. Not many people gather to listen to the knowledge of the Gita, but a very big gathering takes place wherever Bhaagwat is narrated. Why? People do not show much interest in listening to knowledge, but when they see that [*gopis*] are running in practical (to listen to Bhaagwat), then they start saying 'come on, come on, come on' so everyone develops great interest. Arey, what is happening? Such a thing never happened in the world, in the history. Certainly God has come. That Bhaagwat itself reveals God the Father.

.....

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info